10 / 12 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विस्तार से सार में होने का अनुभव

➢➢ संगमयुगी स्वर्ग का आनंद

➳ _ ➳ मैं बाबा की चरित्र भूमि पर हूं...

→ मधुर भूमि, महान भूमि, बाबा की कर्म भूमि है यह...

→ ये संगमयुगी स्वर्ग भूमि है यह...

→ यहाँ बैठ मैं आत्मा अपने भाग्य पर इतरा रही हूं...

→ डबल स्वर्ग की अधिकारी हूं...

■ अभी भी स्वर्ग की अधिकारी, और भविष्य में भी स्वर्ग की अधिकारी आत्मा हूं

➳ _ ➳ इस मधुर दुनिया में कलयुगी प्रभाव से मुक्त हूं...

→ बाबा की इस बगिया का खिला पुष्प हूं...

→ बाबा ने बड़े प्यार से मेरी परवरिश की है...

→ मैं दाता का बच्चा, सदा सम्पन्न आत्मा हूं...

→ सदा एक बाप में लवलीन आत्मा हूं...

■ यही स्थिति मुझे सदा निर्विघ्न बनाती है...

➢➢ अति श्रेष्ठ स्थिति में स्थित हूं

➳ _ ➳ केवल कर्म के लिए साकारी रूप...

→ साकार में रह आकारी रुप धारण कर शक्तिशाली वायब्रेशन फैला रही हूं...

→ स्नेह के, सम्पन्नता के, सर्व को सहयोग देने के...

→ विस्तार को ना देख सार में समाने वाली आत्मा हूं...

→ सदा सार को ही सुनती हूं...

■ व्यर्थ समाप्त हो सिर्फ श्रेष्ठता रह गयी है...

➳ _ ➳ इस ईश्वरीय परिवार की हर आत्मा में कोई न कोई विशेषता है...

→ जादू की नगरी है ये मधुबन...

→ यहाँ आकर हर आत्मा पारस बन जात है...

→ मैं आत्मा इस पारस को छूकर लोहे से सोना बन गई हूँ...

→ मेरे शब्द मीठे हो गए हैं...

■ मुझ आत्मा को बाबा ने पारस मणि बना दिया है...

➢➢ केवल शुभ भावना औऱ कल्याण की ही भावना है

➳ _ ➳ मेरा व्यर्थ समाप्त हो समर्थ में परिवर्तित हो गया है...

→ कोई गलानि की बाते नही...

→ किसी के अवगुणों का वर्णन नहीं...

→ मैं आत्मा खुशी के झूले में झूल रही हूं...

→ अपनी दृष्टि वृति एकाग्र कर अन्य आत्माओं को रियल ज्ञान का परिचय दे रही हूं...

■ मैं हर ओर से चढ़ती कला का अनुभव कर रही हूं...

■ विस्तार को सार में लाना सीख गई हूँ...

■ तृप्त आत्मा हूं...

■ रूहानियत से भरपूर सम्पन्न आत्मा बन गयी हूं...

■ स्वर्गिक आनंद का अनुभव बड़ा निराला है...